International Journal of Enhanced Research in Educational Development
ISSN: 2320-8708, Vol. 4 Issue 5, September-October, 2016

रीतिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

मोनिया दीक्षित

हिंदी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा

सार

रीतिकाव्य रचना का आरंभ एक संस्कृतज्ञ ने किया। ये थे आचार्य केशवदास, जिनकी सर्वप्रसिद्ध रचनाएँ कविप्रिया, रसिकप्रिया और रामचंद्रिका हैं। कविप्रिया में अलंकार और रसिकप्रिया में रस का सोदाहरण निरूपण है। लक्षण दोहों में और उदाहरण कवित्तसवैए में हैं। लक्षण–लक्ष्य–ग्रंथों की यही परंपरा रीतिकाव्य में विकसित हुई। रामचंद्रिका केशव का प्रबंधकाव्य है जिसमें भक्ति की तन्मयता के स्थान पर एक सजग कलाकार की प्रखर कलाचेतना प्रस्फुटित हुई। केशव के कई दशक बाद चिंतामणि से लेकर अठारहवीं सदी तक हिंदी में रीतिकाव्य का अजस्र स्रोत प्रवाहित हुआ जिसमें नर–नारी–जीवन के रमणीय पक्षों और तत्संबंधी सरस संवेदनाओं की अत्यंत कलात्मक अभिव्यक्ति व्यापक रूप में हुई। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकाव्य का शुरूआत केशवदास से न मानकर चिन्तामणि से माना हैद्य उनका कहना है कि – केशवदास जी ने काव्य के सब अंगो का निरूपण शास्त्रीय पद्धति पर किया। यह निसन्देह है कि काव्यरीति का सम्यक समावेश पहले पहल ऑ.केशव ने ही किया। हिन्दी में रीतिग्रन्थों की अविरल और अखंडित परम्परा का प्रवाह केशव की कविप्रिया के प्राय पचास वर्ष पीछे चला और वह भी एक भिन्न आदर्श को लेकर केशव के आदर्श को लेकर नही। वे कहते है कि–हिन्दी रीतिग्रन्थो की अखण्ड परम्परा चिन्तामणि त्रि.से चली , अतरूरीतिकाल का आरम्भ उन्हीं से मानना चाहिए।

परिचय

रीतिकाल के कवि राजाओं और रईसों के आश्रय में रहते थे। वहाँ मनोरंजन और कलाविलास का वातावरण स्वाभाविक था। बौद्धिक आनंद का मुख्य साधन वहाँ उक्तिवैचित्रय समझा जाता था। ऐसे वातावरण में लिखा गया साहित्य अधिकतर शृंगारमूलक और कलावैचित्रय से युक्त था। पर इसी समय प्रेम के स्वच्छंद गायक भी हुए जिन्होंने प्रेम की गहराइयों का स्पर्श किया है। मात्रा और काव्यगुण दोनों ही दृष्टियों से इस समय का नर–नारी–प्रेम और सौंदर्य की मार्मिक व्यंजना करने वाला काव्यसाहित्य महत्वपूर्ण है।

इस समय वीरकाव्य भी लिखा गया। मुगल शासक औरंगजेब की कट्टर सांप्रदायिकता और आक्रामक राजनीति की टकराहट से इस काल में जो विक्षोभ की स्थितियाँ आई उन्होंने कुछ कवियों को वीरकाव्य के सृजन की भी प्रेरणा दी। ऐसे कवियों में भूषण प्रमुख हैं जिन्होंने रीतिशैली को अपनाते हुए भी वीरों के पराक्रम का ओजस्वी वर्णन किया। इस समय नीति, वैराग्य और भक्ति से संबंधित काव्य भी लिखा गया। अनेक प्रबंधकाव्य भी निर्मित हुए। इधर के शोधकार्य में इस समय की शृंगारेतर रचनाएँ और प्रबंधकाव्य प्रचुर परिमाण में मिल रहे हैं। इसलिए

रीतिकालीन काव्य को नितांत एकांगी और एकरूप समझना उचित नहीं है। इस समय के काव्य में पूर्ववर्ती कालों की सभी प्रवृत्तियाँ सक्रिय हैं। यह प्रधान धारा शृंगारकाव्य की है जो इस समय की काव्यसंपत्ति का वास्तविक निदर्शक मानी जाती रही है। शृंगारी काव्य तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है। पहला वर्ग रीतिबद्ध कवियों का है जिसके प्रतिनिधि केशव, चिंतामणि, भिखारीदास, देव, मतिराम और पद्माकर आदि हैं। इन कवियों ने दोहों में रस, अलंकार और नायिका के लक्षण देकर कवित्त सवैए में प्रेम और सौंदर्य की कलापूर्ण मार्मिक व्यंजना की है। संस्कृत साहित्यशास्त्र में निरूपित शास्त्रीय चर्चा का अनुसरण मात्र इनमें अधिक है। पर कुछ ने थोड़ी मौलिकता भी दिखाई है, जैसे भिखारीदास का हिंदी छंदों का निरूपण। दूसरा वर्ग रीतिसिद्ध कवियों का है। इन कवियों ने लक्षण नहीं निरूपित किए, केवल उनके आधार पर काव्यरचना की। बिहारी इनमें सर्वश्रेष्ठ हैं, जिन्होंने दोहों में अपनी ष्सतसईश प्रस्तुत की। विभिन्न मुद्राओंवाले अत्यंत व्यंजक सौंदर्यचित्रों और प्रेम की भावदशाओं का अनुपम अंकन इनके काव्य में मिलता है। तीसरे वर्ग में घनानंद, बोधा, द्विजदेव ठाकुर आदि रीतिमुक्त कवि आते हैं जिन्होंने स्वच्छंद प्रेम की अभिव्यक्ति की है। इनकी रचनाओं में प्रेम की तीव्रता और गहनता की अत्यंत प्रभावशाली व्यंजना हुई है।

रीतिकाव्य मुख्यतरू मांसल शृंगार का काव्य है। इसमें नर–नारीजीवन के रमणीय पक्षों का सुंदर उद्घाटन हुआ है। अधिक काव्य मुक्तक शैली में है, पर प्रबंधकाव्य भी हैं। इन दो सौ वर्षों में शृंगारकाव्य का अपूर्व उत्कर्ष हुआ। पर धीरे धीरे रीति की जकड़ बढ़ती गई और हिंदी काव्य का भावक्षेत्र संकीर्ण होता गया। आधुनिक युग तक आते आते इन दोनों कमियों की ओर साहित्यकारों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ।

इतिहास साक्षी है कि अपने पराभव काल में भी यह युग वैभव विकास का था। मुगल दरबार के हरम में पाँच–पाँच हजार रूपसियाँ रहती थीं। मीना बाजार लगते थे, सुरा–सुन्दरी का उन्मुक्त व्यापार होता था। डॉ० नगेन्द्र लिखते हैं– वासना का सागर ऐसे प्रबल वेग से उमड़ रहा था कि शुद्धिवाद सम्राट के सभी निषेध प्रयत्न उसमें बह गये। अमीर–उमराव ने उसके निषेध पत्रों को शराब की सुराही में गर्क कर दिया। विलास के अन्य साधन भी प्रचुर मात्रा में थे। पद्माकर ने एक ही छन्द में तत्कालीन दरबारों की रूपरेखा का अंकन कर दिया है–

गुलगुली गिल में गलीचा हैं, गुनीजन हैं,

चाँदनी है, चिक है चिरागन की माला हैं।

कहैं पद्माकर त्यौं गजक गिजा है सजी

सेज हैं सुराही हैं सुरा हैं और प्याला हैं।

सिसिर के पाला को व्यापत न कसाला तिन्हें,

जिनके अधीन ऐते उदित मसाला हैं।

तान तुक ताला है, विनोद के रसाला है,

सुबाला हैं, दुसाला हैं विसाला चित्रसाला हैं।

लौकिकता, श्रृंगारिकता, नायिकाभेद और अलंकार–प्रियता इस युग की प्रमुख विशेषताएं हैं। प्रायः सब कवियों ने ब्रज–भाषा को अपनाया है। स्वतंत्र कविता कम लिखी गई, रस, अलंकार वगैरह काव्यांगों के लक्षण लिखते समय उदाहरण के रूप में – विशेषकर श्रृंगार के आलंबनों एवं उद्दीपनों के उदाहरण के रूप में – सरस रचनाएं इस युग में लिखी गईं। भूषण कवि ने वीर रस की रचनाएं भी दीं। भाव–पक्ष की अपेक्षा कला–पक्ष अधिक समृद्ध रहा। शब्द–शक्ति पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया, न नाटयशास्त्र का विवेचन किया गया। विषयों का संकोच हो गया और मौलिकता का ह्रास होने लगा। इस समय अनेक कवि हुएकृ केशव, चिंतामणि, देव, बिहारी, मतिराम, भूषण, घनानंद, पद्माकर आदि। इनमें से केशव, बिहारी और भूषण को इस युग का प्रतिनिधि कवि माना जा सकता है। बिहारी ने दोहों की संभावनाओं को पूर्ण रूप से विकसित कर दिया। आपको रीति–काल का प्रतिनिधि कवि माना जा सकता है।

रीति ग्रंथकार कवि और उनकी रचनाएँ

संस्कृत में काव्यांग निरूपण शास्त्रज्ञ आचार्य करते थे, कवि नहीं । वे काव्यविवेचन के दौरान प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं को उद्धृत करके अपनी बात समझाते थे । लेकिन रीतिकाल में रीति ग्रंथ लिखने वाले या काव्य पर विचार करने वाले आचार्य नहीं ,मूलतरू कवि ही थे । इसलिए उन्होंने नायकों,नायिकाओं,रसों,अलंकारों,छंदों के विवेचन पर कम, इनके दिए गए लक्षणों के उदाहरणों के रूप में रचनाओं पर ज्यादा ध्यान दिया । उन्होंने अन्य कवियों की रचनाओं के उदाहरण नहीं दिए बल्कि स्वयं काव्य रचा । इसलिए इस काल के रीति ग्रंथाकार आचार्य और कवि दोनों एक ही होने लगे । लेकिन इस संदर्भ में यह स्मरण रखना चाहिए कि ये दोनों कार्य , कवि–कर्म और आचार्य कर्म परस्पर विरोधी हैं । कवि के लिए भावप्रवण हृदय चाहिए वहीं आचार्य कर्म की सफलता के लिए प्रौढ़–मस्तिष्क और सर्वांग–पूर्ण संतुलित विवेचन शक्ति की अपेक्षा हुआ करती है । रीतियुगीन रीति–ग्रंथाकार पहले कवि है, आचार्य कर्म तो उसे परम्परावश और राजदरबार में रीतिशास्त्र के ज्ञान की अनिवार्यतावश अपनाना पड़ा ।

इस युग के प्रमुख रीतिग्रंथकार कवि और उनकी रचनाओं का विवरण हम नीचे दे रहे हैं –

केशवदास

ये रीतिकाल के प्रवर्त्तक कवि हैं । इनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं –

1. कविप्रिया 2.रसिकप्रिया 3.चंद्रिका 4. रामचंद्रिका 5. चंद्रिका 6. विज्ञानगीता 7. रतनबावनी 8. जहाँगीरजस 9. वीरसिंह देव चरित । इनकी भाषा ब्रज है ।

चिंतामणि

इनकी रचनाएँ हैं रू 1. कविकुलकल्पतरु 2. पिंगल 3. काव्य–विवेक 4. काव्य–प्रकाश 5. रसमंजरी 6. श्रृंगार–मंजरी 7.रस–विलास 8. कृष्ण–चरित 9. कवित्तविचार 10. छंद–विचार पिंगल । (भाषा रू ब्रज)

मतिराम

इनकी मुख्य रचनाएँ हैं रू 1. ललितललाम 2. छंदसार 3. रसराज 4. साहित्य सार 5. लक्षण श्रृंगार 6.मतिराम सतसई 7.फूलमंजरी 8.अलंकार पंचशिका (भाषा रूब्रज)

भूषण

मुख्य रचनाएँ

1. शिवराज भूषण 2.भूषण उल्लास 3. दूषण उल्लास 4. भूषण–हजारा 5.शिवा बावनी 6. छत्रसाल दशक । (भाषा ब्रज)

भिखारीदास

मुख्य रचनाएँ रू 1. काव्य–निर्णय 2. श्रृंगार निर्णय 3. रस–सारांश 4. शतरंज शतिका 5. शब्द नाम प्रकाश 6. विष्णु पुराण भाषा 7. छंदार्णव पिंगल ।

देव

इनके मुख्य ग्रंथ हैं रू 1.रस–विलास 2. भवानीविलास 3. भावविलास 4. कुशलविलास 5. जाति विलास 6. प्रेमपचीसी 7. प्रेम–तरंग 8. प्रेमचंद्रिका 9. काव्य रसायन (भाषा ब्रज)

पद्माकर

मुख्य रचनाएँ रू 1.पदमाभरण 2. हिम्मत बहादुर 3. जगद् विनोद 4. प्रबोध पचीसी 5. राम रसायन 6. विनोद पचासा 7. गंगालहरी 8. यमुनालहरी । (ब्रज भाषा)

अमीरदास

मुख्य रचनाएँ रू 1.सभा मंडन 2. वृतचंद्रोदय 3. ब्रजराजविलास 4. सतसई 5. अमीर प्रकाश 6. वैद्यकल्पतरु 7. श्री कृष्ण साहित्य सिंधु (ब्रज भाषा)

श्रीपति

मुख्य रचनाएँ रू 1.कविकल्पद्रुम 2. सरोजकालिका 3. काव्य सरोज 4. विक्रम विलास 5. अनुप्रास विनोद 6. अलंकार गंगा ।

कुलपति मिश्र

1. संग्राम सार 2. रस–रहस्य 3.नखशिख 4.द्रोणपर्व 5. मुक्ति तरंगिणी ।

सोमनाथ

1. रसपीयूषनिधि 2. सुजानविलास 3. श्रृंगार विलास 4. पंचाध्यायी 5.कृष्णलीलावती 6. माधवविनोद

निष्कर्ष

रीतिकालीन काव्य को किसी भी एक रेखीय प्रणाली के आधार पर मूल्यांकित करके सरल निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं पर मेरी प्रस्तावना यही है कि किसी भी काल की मूल्यांकन पद्धति चक्रीय होती है एक रेखीय नहीं। इस काल हेतु भी मूल्यांकन के लिए समग्रता से इस काव्य के पठन और आलोचना की आवश्यकता है। पूर्वग्रह से

ग्रसित होकर इसे विशिष्टतम अथवा निकृष्टतम कहना सही नहीं बल्कि धैर्य और परिश्रम की जरूरत है। याद रखना होगा कि ठाकुर इसी काल में काव्य में अलंकारों की भरमार की भर्त्सना का साहस करते है, 'सीख लीनो मीन मृग, खंजन कमल नैन डेल सो बनाए आए मेलत सभा के बीच, लोगन कबित्त कीबो खेल करि जानो है. और देव के काव्य में वर्ण–जातिभेद पर तिरस्कार और भर्त्सना के उदाहरण मिलते हैं'।

इस काल की समझ को एक स्त्री के दृष्टिकोण से समझा जाना और देखा जाना चाहिए ताकि इस काल के प्रति भी नई दृष्टि विकसित की जा सके।

संदर्भ

1. मिश्र, रामदरश. काव्य गौरव. नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन. पृ० 15. अभिगमन तिथि 19 जून 2015.
2. वत्स, राकेश. प्रेम पथिक परमपरा में चन्द्रकुँवर बर्तवाल की श्मेघनन्दिनीश. वाणी प्रकाशन.
3. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान।